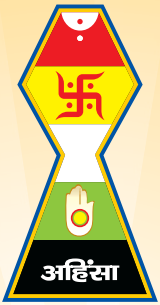

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

थुई-चउक्कं

(स्तुति-चतुष्कम्)

गुरु सुदंसण सीसो जयो मुणी

जय जिनशासन प्रकाशन

थुई-चउक्कं

(स्तुति-चतुष्कम्)

गुरु सुदंसण सीसो जयो मुणी

प्रथम संस्करण - अक्टूबर 2024

सर्वाधिकार © प्रकाशक

प्रकाशक/ प्राप्ति स्थान :-
रविन्द्र जैन
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमेन्ट्स, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली - 110085
Mob : +91-98102 87464
Email : jaijinshaasnprakaashan@gmail.com

मुद्रक :-
Shree Offset Printers
Mob : +91-98103 91530
Email : shrioffset2010@gmail.com

थुई - चउक्कं

(स्तुति-चतुष्कम्)

गुरु सुदंसण सीसो जयो मुणी

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

अनुक्रमणिका

क्रम	विवरण	पृष्ठ
	प्रकाशकीय	iv
1.	देवत्थुई	01
2.	गुरुत्थुई	19
3.	धम्मत्थुई	34
4.	पागय भासा-थुई	49
5.	सुदंसण गुरु थवो	53

प्रकाशकीय

हमारे लिए परम हर्ष का विषय है कि 'प्राकृत भाषा' में रचित यह लघु पुस्तिका आपकी सेवा में प्रस्तुत की जा रही है ।

भगवान् महावीर स्वामी का 2550वाँ निर्वाण वर्ष चल रहा है तथा उनके उपदेशों की भाषा प्राकृत रही है। संघ शास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. का 25वाँ स्मृति वर्ष है। उन्होंने प्राकृत भाषा की समुन्नति में स्वयं तथा अपने मुनियों को नियुक्त रखा। इन दोनों प्रसंगों पर दोनों आराध्य भगवान् और गुरु को यह रचना उपहृत कर रहे हैं। देव- गुरु एवं धर्म की स्तुति के साथ-साथ एक स्तुति प्राकृत भाषा को भी समर्पित है। एक प्राकृत गीत भी साथ में संगृहीत है।

रचनाकार बहुश्रुत श्री जय मुनि जी म. हैं, जो कई भाषाओं के ज्ञाता हैं तथा प्राकृत भाषा पर जिनका विशेष अधिकार है तथा प्राकृत भाषा के प्रचार, प्रसार और अध्ययन अध्यापन के लिए बहुत प्रयास कर रहे हैं। इन्होंने प्राकृत भाषा में और भी रचनाएं की हैं।

इस पुस्तिका की रचना के लिए प्रेरणा देने वाले विशिष्ट दो व्यक्तित्व हैं - श्री जितेन्द्र बी. शाह (अहमदाबाद) और श्री प्रमोद जैन C.A.(बैंगलौर)। श्री जितेन्द्र बी. शाह के नेतृत्व में तीन वर्ष से प्राकृत की संगोष्ठी हो रही है। उन्हीं के प्रयास से केंद्रीय सरकार ने 'प्राकृत भाषा' को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने की घोषणा की है। प्राकृत भाषा को व्यापक बनाना हम सब का कर्तव्य है। प्रथम प्रयास के रूप में इस लघु पुस्तिका का अध्ययन करें।

संघ संचालक श्री नरेश मुनि जी म. ने हमें ये अवसर प्रदान कर असीम कृपा की है। हम उनके प्रति भावपूर्ण कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

जय जिनशासन प्रकाशन

रविन्द्र जैन

देवत्थुई

(देव-स्तुति)

1. **देवाहिदेवं पहुवीयरागं,**
बंभं सिवं ईसरनामधेयं ।
गोडं खुदल्लं परमप्पसन्नं,
सव्वुच्चसत्तं सययं नमामि॥

ब्रह्मा शिव ईश्वर प्रभु भगवान जिसके नाम हैं,
खुदा अल्ला GOD स्वामी पुरुष सच्चा धाम है।
परमात्मा सर्वोच्च सत्ता देवों का वो देव है,
भक्ति से झुकता सदा मस्तक मेरा स्वयमेव है॥

2. **पगासरूवो अरिहन्तसिद्धो,**
सव्वण्णुदंसी पुरिसो अकालो।
ईसो निरंकार विसुद्ध बुद्धो,
साहिज्जए सद्द सएहि देवो ॥

सिद्ध ज्योतिरूप वो अरिहन्त बुद्ध प्रबुद्ध है,
पुरुख है अ-काल वो सर्वज्ञ ईश विशुद्ध है।
सैंकडों शब्दों से संबोधित किया जाता उसे,
निरंकार परमपिता कर्ता कहा जाता उसे॥

3. **पोराणिया बिंति मणुस्सरूवे,**
ओयारहारी परमप्पओ नु ।
निग्गंथगाणं इयरा पइण्णा,
अप्पा सयं होइ परो खु ईसो॥

इंसान के आकार में भगवान् होता अवतरित,
जगत् की रक्षा है करता, है पुराणों में लिखित।
जैन दर्शन कहता है इंसान ही भगवान् है,
शुद्ध होकर अंततः पाता वो मुक्ति स्थान है॥

4. **सागार रूवो अरिहन्तसामी,**
सिद्धो निरागार गुणो महेसो।
चत्तारि कम्माणि य अट्ठकम्मे,
विणासगो जो अरिहन्त सिद्धो॥

भगवान् के दो रूपों को वन्दन किया नवकार में,
एक बिन आकार है और एक है आकार में।
चार घाती कर्म के घातक प्रभु अरिहन्त हैं,
सिद्ध हैं बनते जो करते कर्म अष्टक अंत हैं॥

5. **एयम्मि काले उसहो जिणेसो,**
वीरो पहू अंतिम तित्थकत्ता ।
वावीस अण्णे पहुणो विसिट्ठा,
रूवे हवंते परमप्पणो हि॥

बहुत आत्माएं बनी परमात्मा हैं लोक में,
ऋषभ से महावीर हैं इतिहास के आलोक में।
अन्य बाईस तीर्थंकर जिनराज हैं भगवान् हैं,
इस जगत् में इन सभी का उच्चतम अवदान है॥

6. **सरीर लिंगाण न कोइ भेओ,**
इत्थी नपुंसा पुरिसा वि सिद्धा।
गिहत्थ वासा जइणा य अण्णे,
संणासवंतो लहिरे पहुत्तं॥

सिद्ध बनने में कोई बाधा नहीं है शरीर की,
पुरुष नारी और नपुंसक पाते स्थिति अशरीर की।
जैन जैनेतर सभी भिक्षु बने परमात्मा,
घर में भी हो सकता है छद्मस्थता का खात्मा॥

7. **न सो नपुंसो पुरिसो न इत्थी,**
देहत्थधम्मा परमप्पणो न।
न बम्हणो सो समणो वि नत्थि,
विसेसणेहिं रहिओ नहं व॥

परमात्मा नहीं जिस्म है इसलिए पुरुष नारी नहीं,
और नपुंसक किस तरह हो जब वो देहधारी नहीं।
श्रमण ब्राह्मण संस्कृति या मान्यता उसमें नहीं,
हर निशानी से रहित आकाश की उपमा सही॥

8. **कम्मेण कट्टुं निहणाइ एगो,**
अण्णो य धम्मेण ददाइ सोक्खं।
अज्झप्पहेउं भयवं नु वीरो,
कण्हो तु जाओ भयवं सुकम्मा॥

जो भी कष्टों को निवारे करता जो समाधान है,
जनता की दृष्टि में वो ईश्वर खुदा भगवान् है।
अध्यात्म से महावीर ने सारी समस्या दूर की,
कर्म से श्री कृष्ण ने चिंताएं सारी चूर की॥

9. **आगच्छए सो सयमेव पुण्णो,**
अंसेण आगम्म धरेइ पिच्छिं [1]।
पेसेइ पुत्तं नियवंसकारं,
संदेसहारं भयवं गमेइ॥

पूरा या आंशिक प्रभु अवतार लेकर आता है,
या वो अपने तन से ही निज वंश को विकसाता है।
देता है पैगाम क्या पैगम्बरों को भेजकर,
किस तरह रखता है इस संसार को वो सहेजकर॥

10. **संतामहंता उवएसदाया सिद्धा,**
पसिद्धा य जया हवंति।
भत्ता तया तं भगवं कहेंति,
सद्दो नु एसो बहुरूवधारी॥

सर्व विश्रुत ज्ञानी ध्यानी संत देते ज्ञान हैं,
धीरे-2 जन हृदय में गहरा बनता स्थान है।
उनको ही भगवान् कहना भक्त करते हैं शुरु,
यों विविध अर्थों में हम होते खुदा से रूबरू॥

1. पृथ्वी

11. सच्चस्स उत्ती[1] भगवस्स पूया,
सुत्तेसु वीरेण फुडं सुउत्तं ।
गुणा अणेगे भगवं सरूवा,
अहिंस सेवा तव संजमा वि॥

सूत्रों में ऐसा कहा सच्चाई ही भगवान है,
सत्यभाषण ईश पूजन दोनों एक समान हैं।
इस तरह सेवा अहिंसा साधना संयम नियम,
ये सकल गुण पुञ्ज हैं सत्यम् शिवम् और सुन्दरम्॥

12. सो कत्थ पाविज्जइ चिंतणेयं,
जया पयट्टा तइया कहेंति ।
सो मंदिरे मज्जिद थाणगेसु,
तित्थेसु सत्ता इइ केचणाहु॥

प्रश्न है भगवान् का स्थायी ठिकाना है कहाँ,
मन्दिरों में मस्जिदों में मिलता है उसका निशां।
तीर्थ स्थानों पर बताते उसका पक्का वास हैं,
लोक श्रद्धा है या केवल भ्रान्ति है आभास है॥

1. उक्तिः = कथनम्

13. **सिक्खाण अज्जो[1] गुरु नाणगो उ,**
काबा हि हुत्तं [2] चलणे विहित्ता।
एमेव लिंगे गुरु सिद्धसेणो,
संदिट्ठवं सोऽत्थि जगंसि सव्वे॥

बाबा नानक देव ने काबा में इक जादू किया,
शिव के चिह्न पर पादयुग सिद्धसेन ने था धर दिया।
दे दिया संदेश ये कि हर जगह भगवान् है,
तालों में उसे कैद करना उसका ही अपमान है॥

14. **नरेण ईसो रइओ नियत्थं [3],**
ईसेण अहवा रइओ मणुस्सो।
एयस्स पण्हस्स सदुत्तरं तु,
तक्कप्पहाणा बिइयं मणंति॥

ये पुरानी सोच है मानव रचा भगवान् ने,
है नया चिंतन कि ईश्वर को रचा इंसान ने।
निज जरूरत के मुताबिक कल्पना की ईश की,
मूर्तियों चित्रों में कल्पित आकृति भी थोप दी॥

1. आद्यः = प्रथमः 2. काबाभिसुखम् 3. निजार्थम्

15. **इच्छाइ विस्सं परमप्पणो हि,**
विणा न कज्जं हवए उ किंचि।
सच्चं जईमं मणणं हवेज्जा,
ता तण्णिसेहो वि पहुस्स इच्छा॥

परमात्मा की इच्छा बिन पत्ता भी गर हिलता नहीं,
उसकी सत्ता का निषेधक फिर कोई मिलता नहीं।
या तो प्रभु का नास्तिकों को भी समर्थन मिलता है,
या बिना मर्जी भी उसकी जगत् सारा चलता है॥

16. **आगार सुण्णो परमप्पओ नु,**
मोहंमदीया बहु हिंसकारा।
जुद्धस्स हेऊ परमेसरो नु,
मणुस्सहाणी विहिआ उ केण? ॥

भगवान् की प्रतिमा मिटाने के लिए मुस्लिम चले,
उस खुदा के वास्ते काटे करोड़ों के गले।
है दयालु ईश तो वह युद्ध क्यों करवाता है,?
किसलिए भगवान् का युद्धों से गहरा नाता है॥

17. किं कारणा विस्समिणं विणिम्मियं,
अज्जावि पण्हस्स न उत्तरोऽत्थि।
कीलाइ कारुण्ण सहाय हेओ,
एगो वि तक्को नहि तुट्टिकत्ता॥

सृष्टि को भगवान् ने किस वास्ते निर्मित किया,
पूछा हमने पर किसी ने हल नहीं समुचित दिया।
क्रीड़ा करुणा सहायता आदि अनेकों तर्क हैं,
लगता है बहकाने को लिख डाले सारे बर्क[1] हैं॥

18. किं वंदणिज्जो पढमं महेसो,
गुरू व संका परिहारणत्थं।
सिरी कबीरो गुरुणो गुरुत्तं,
कहेइ सो चेव पहुस्स पंथा॥

गुरु खड़े गोबिन्द खडे पहले हो किसकी वन्दना,
दोनों में पहले कबीरा ने गुरु को ही चुना।
लक्ष्य तो भगवान् है, गुरुदेव बनते राह हैं,
राह जो पकडे उसी की पूरी होती चाह है॥

1. Page-पृष्ठ

19. **पगासथंभो इव होई ईसो,**
हत्थेण गेण्हित्तु न णेइ मोक्खं।
गुरू सयं गेण्हइ पेम्मपुव्वं,
सीसं तहा गच्छइ जाव लक्खं॥

रोशनी के स्तम्भ बन प्रभु रोशनी फैलाते हैं,
नहीं किसी को पकडकर वे मोक्ष में ले जाते हैं।
प्रेम पूर्वक शिष्य का गुरुवर पकड़ते हाथ हैं,
और अन्तिम लक्ष्य तक उसका निभाते साथ हैं॥

20. **आसी जुगो सम्मपहीण[1] उग्गो,**
घोसंति उच्चेण सरेण विण्णू[2]।
मआ सया ईसर सण्ण सत्ती,
तेहिं कया रज्जविही अधम्मा॥

साम्यवादी चिंतकों ने घोषणा की जोर से,
मर गया ईश्वर हमेशा के लिए हर ओर से।
अब न कोई नाम लेगा धर्म का भगवान् का,
सैकुलरिज्म अंग होगा हर देश के संविधान का॥

1. साम्यवाद पथिनां 2. विज्ञा:

21. तेसिं कए ईस विगप्पणाहि,
नवा कया विण्णु जणेहि भव्वा।
सच्चं सिवं सुन्दर रूवमीसं,
न एत्थ कस्सावि विरोहिआऽत्थि [1]॥

उनके उत्तर में कई विज्ञों ने दी नव कल्पना,
कुछ विशेषण चुन लिए, उनसे दिया ईश्वर बना।
सत्य शिव सुन्दर कहो, ईश्वर कहो इक बात है,
साम्यवादी बोले इसमें तो हमारा साथ है॥

22. सेवा य से भत्ति चरित्त नाणा,
सक्का य झाणेण अणासवेण।
आया सयं हि परमायभावं,
लहित्तु सव्वेहि दुहेहि मुच्चे॥

भगवान् की आराधना चारित्र भक्ति ज्ञान से,
और होती आस्रवों को रोकने से, ध्यान से।
इस विधि से आत्मा परमात्मा बन जाती है,
सर्व दु:खों से विलग शाश्वत सुखों को पाती है॥

1. विरोधिता

23. **नामेण दव्वेण ठवणाइ भावा,**
चत्तारि हुंति पहु सद्द अट्ठा।
निक्खेव चच्चा अणुओगदारे,
सत्थे कया अप्पबहुत्तयं च॥

भगवान् है इक शब्द इसके चार अर्थ बतलाए हैं,
सूत्र श्री अनुयोग में निक्षेप ये कहलाए हैं।
नाम है और स्थापना फिर द्रव्य भाव ये द्वार हैं,
प्रथम तीनों गौण हैं, बस भाव में ही सार है॥

24. **नारायणोच्चारण कारणेण,**
गावागिई दंसण वंदणेण।
वेसस्स देहस्स य पूयणाए
भन्नंति मोक्खं पढमा निखेवा॥

इक नारायण का उच्चारण मोक्ष का कारण बना,
प्रतिमा दर्शन है किसी के लिए तरण तारण बना।
वेष को और देह को कुछ पूजते भगवान् के,
भाव बिन तीनों ही ये निक्षेप हैं निष्प्राण से॥

25. चउत्थणिक्खेव वियारणाए,
भावेण सिद्धो नणु वंदणिज्जो।
सो चेव मोक्खस्स निमित्तभूओ,
अण्णे सहायं कुणिरे न वावि॥

भगवान् के गुण जिनमें होते बस वही भगवान् है,
उसको ही वन्दन करो ये भाव का फरमान है।
मुक्ति का कारण यही है, तीन का निश्चय नहीं,
तीन में संशय है रहता भाव में संशय नहीं॥

26. पच्छित्थिमिल्ला समयण्णुणो हि,
नारायणं हिच्च नरं महंति।
मणुस्स वादो चलए युरोवे,
धम्मं च दाणिं मणुयस्स सेवा॥

पश्चिमी देशों के दर्शनविद् ये कहते आजकल,
इंसान को भगवान् मानो उच्चतम है ये नसल।
मानवों की सेवा में जनता धर्म है मानती,
है ये मानववाद इसको दुनिया सब पहचानती॥

27. **जगम्मि पुण्णो कणसो विहुत्ति,**
सव्वत्थ कत्ता अहवा न कत्ता।
अम्हाण एगा मणसो नु चिंता,
होज्जा कहं नु स अत्त-वत्तो[1] ॥

सृष्टि के कण-2 में व्यापक वो प्रभु है या नहीं,
इस चराचर जग का कर्ता वो प्रभु है या नहीं।
हमको इस चिंता से पहले एक चिंता खास है,
क्या हमारी जिंदगी में उस प्रभु का वास है॥

28. **अण्णे वयंतीह मणंसि ईसो,**
निच्चं सुगुत्तो पिहियागई य।
अन्नेसियव्वो भयवं पयत्ता,
नन्नत्थ कत्था वि गवेसणीओ॥

गिरि गुहाओं में रसातल में नहीं उसका पता,
चन्द्रतल पर स्वर्ग आदि से न उसका वासता।
वह तो मानवमन के गहरे कोष में विद्यमान है,
ढूंढो उसको मन लगाकर कहते संत महान् हैं॥

1. आत्म-व्याप्त:

29. **एगो उवालंभइ जेण साहुं,**
तुम्हे निसेहं पहुणो करेह।
अम्हे तयत्थं सव्वं चयामो,
किं भे चइत्था पहुणो निदेसा॥

व्यङ्ग्य तीखा दंभी ने इक जैन साधु पर कसा,
तुमने ईश्वर को नकारा है जो कर्ता विश्व का।
संत बोले हमने ईश्वर के लिए सब कुछ तजा,
बोलो तुमने उस प्रभु के वास्ते है क्या किया॥

30. **जे बोद्ध जेणा पहुणो विरुद्धा,**
अण्णेण रूवेण भयंति ते वि।
जायंति आरुग्ग समाहि बोहिं,
सिद्धिं च सिद्धेहि न सो विरोहो॥

जैन बौद्धों ने उसे नहीं मानकर भी माना है,
भक्ति की भगवान् की, की प्रार्थनाएं नाना हैं।
आरोग्य बोधि और समाधि का हे भगवन् दान दो,
याचना करते हैं सिद्धों से कि सिद्धिस्थान दो॥

31. भत्तामराई बहवो थुईओ,
आयारिएहिं रइया मणामा।
तेसु हि भत्ती गहणा पहुस्स,
माहप्पमेयं भगवंत नामे॥

भक्तों सन्तों कवियों ने भक्तामरादि हैं रचे,
ग्रन्थ कितने गुम हुए पर भक्तिस्तव अब भी बचे।
भगवान् के शुभनाम की महिमा सुनो इतनी गहन,
छोडने वाले भी उसको अंततः करते ग्रहण॥

32. विण्णाणिणो नो भयवं मणंति,
मीमांसगा संख वियारगा वि।
नेआइयाणं वइसेसिगाणं,
सण्णा इयं जं भयवं हि कत्ता॥

विज्ञान के अनुसार सत्ता है नहीं भगवान् की,
मीमांसकों सांख्यों ने दृष्टि मान्य की विज्ञान की।
नैयायिकों वैशेषिकों ने कर्ता हर्ता माना है,
भगवान् का मुद्दा हमेशा उलझा ताना बाना है॥

33. संती समाही मणसो य लब्भा,
गेण्हाहि नामे अरिहंत सिद्धे।
चत्तारि मंगल्ल विहायगा[1] खु,
सव्वा समस्सा होही पहीणा॥

समता शान्ति और समाधि जिस किसी को चाहिए,
सिद्धों व अरिहन्तों का शुभनाम मुख पर लाइए।
मांगलिक और उत्तमोत्तम चार शरणों का स्मरण,
बनता है वरदान और करता है विघ्नों का हरण॥

34. अणंतकाले चउवीस आसी,
तित्थेसमाला नु अणंतखुत्तो।
सिद्धो य बुद्धो तह वीयरागी,
नाणेण जुत्तो तह दंसणेण॥

जैनों के अनुसार तो प्रभु भी असंख्य अनन्त है,
कालचक्र अनन्त बीते चौबीसियां अनन्त हैं।
वीतरागी सिद्ध हैं वो बुद्ध हैं और मुक्त हैं,
ज्ञान दर्शन से सदा समृद्ध और संयुक्त हैं॥

1. मांगल्य विधायक

35. पवाहरूवेण अणाइ णंते,
एगत्तभावेण य ते अणंते।
सुरा सुरिं देहि नरेहि वंदे[1],
सव्वे जिणेहं तिविहेण वंदे॥

हर सिद्ध की आदि है उसका अंत होता है नहीं,
सर्व सिद्धों की अपेक्षा आद्य बिन्दु है नहीं।
ऐसे सिद्धों को सुरासुर नर हैं करते वन्दना,
उन जिनेन्द्रों को है मेरी योग त्रय की अर्पणा॥

1. वंद्यान्

गुरुत्थुई

(गुरु-स्तुति)

1. **इच्छंति नाउं चरियं विसुद्धं,**
भत्तीइ निट्ठा खु सुदंसणस्स।
सो केरिसो धम्मकहा गुरुस्स,
संघस्स सेवा गुरुणा कया य॥

भक्त श्रद्धानिष्ठ श्रावक गुरु सुदर्शन लाल के
चाहते हैं जानना कुछ अंश वृत्त विशाल के।
किस तरह जीवन जीया कैसी सुनाते थे कथा,
और चलाई किस तरह थी संघ की पावन प्रथा॥

2. **रोहीतए तस्स सुजम्ममासी,**
पुत्तं पसूया खलु सुन्दरी सा।
से चंदगीराम सुनाम धेज्जो,
पिया य जग्गूमल पुत्तराए॥

जन्म रोहतक शहर में गुरुदेव का था जब हुआ,
सुन्दरी मां का हृदय पुलकित प्रफुल्लित तब हुआ ।
बुद्धि के सिन्धु पिताश्री चंदगीराम वकील थे,
बाबा जग्गूमल हृदय के सरल, सेवाशील थे॥

3. दिक्खा गहीया मयणा गुरुत्तो,
सेवा कया सव्वगुरूण तेण ।
सीसा विणीआ लहिआ अणेगे,
पुण्णं विसिट्ठं फलिअं नु दिट्ठं॥

मदन गुरुवर के चरण में ली प्रव्रज्या भगवती,
वरिष्ठ संतों की सदा सेवा की बन सेवाव्रती ।
शिष्य भी पाए अनेकों जातिकुल संपन्न थे,
पुण्य पुंजों के धनी कृतपुण्य थे और धन्य थे॥

4. महव्वया पंच अहिंस सच्चं,
अतेणगं संगह भोग-चाओ।
सव्वं स सम्मं अइयार- सुन्नं,
लक्खं पवन्नो लहु पालिऊण॥

जो महाव्रत पांच प्रभुवर वीर ने फरमाए हैं,
प्रथम अहिंसा सत्य फिर अस्तेय क्रमशः आए हैं।
ब्रह्मचर्य अपरिग्रह पाले निर् अतिचार थे,
इसलिए गुरुवर सुदर्शन पहुंचे सिद्धि द्वार थे॥

5. **तिगुत्तिगुत्तो समिईसु जुत्तो,**
णिच्चं पमाया विरओ मुणीसो।
चिंतेइ अंतो गहिओ नु वेसो,
मुणिस्स तो सुट्ठु वहामि मोणं॥

तीन गुप्ति पांच समिति में समाया धर्म है,
इनका आराधन ही गुरुवर ने चुना निज कर्म है।
सोचते थे वेष संयम का लिया जो भाव से,
उसको सजाऊँगा सदा उल्लास से और चाव से॥

6. **समाहिओ चत्त मयप्प भारो,**
चउव्विहं पालइ सो समाहिं।
जिणेण वुत्तं विणओ सुयं च,
तवो य आयार समाहिभावो॥

थे समाहित अहम् का हर भार छोड़ा ज्ञान से,
आगमोक्त समाधि पाली प्राण से और जान से।
विनय समाधि, श्रुत समाधि, तप समाधिवान् थे,
नव्य युग में आचरण उनके ही मान्य प्रमाण थे॥

7. **कोहं समित्ता पसमं लहीअ,**
माणं वमित्ता विणयं गहीअ।
मायं चइत्ता रिउयं पवण्णो,
लोहं विजित्ता परमो सुही भू॥

क्रोध की अग्नि शमित कर शांति के सागर बने,
मान मद का वमन करके नम्रता के घर बने ।
माया छल त्यागे सरलता उनकी ये पहचान थी,
लोभ को ठोकर लगा पाई सुखों की खान थी॥

8. **काएण वाया तह माणसेणं,**
पावं जहित्ता सुह-साहगो नु।
सज्झाय-सुज्झाण-रओ विमुत्तो,
जत्तो य वेयावडिए गुरूणं॥

काया से, वाणी से, मन से लोग करते पाप हैं,
तीनों के सम्यग् प्रवर्तक शुभदिशा में आप हैं।
मन लगाया ध्यान में वाणी लगी स्वाध्याय में,
सेवा इतनी गहन की आया पसीना काय में॥

9. **नाणं पहूणं पइभाइ नायं,**
सद्धा गहीरा जिण देववक्के ।
चारित्तमुग्गं अइ निम्मलं ते,
एवं तिगं ते रयणाण लद्धं॥

अपने प्रतिभाबल से आगम ज्ञान सीखा गहनतम,
जिन वचन पर श्रद्धा गहरी कहते ये है प्राणसम।
शुद्धतम चारित्र धन उत्साह से अर्जित किया,
रत्नत्रय को जिंदगी भर आपने संचित किया॥

10. **संघस्स सोहा तव लक्खमासी,**
तीए कए अप्पियमंगमंगं।
सोढा दुहा माणस-देहिया नु,
जम्हा सिया सासण-हीलणा न॥

संघ की शोभा बढ़े ये जिंदगी का ध्येय था,
देह भी अर्पित किया बलिदान अननुमेय था।
मन की पीड़ा देह के दुख इसलिए झेले प्रचुर,
हो नहीं जाए मलिन शासन का ये निर्मल मुकुर॥

11. **विनम्मयाए सिसुया तवोच्चा,**
विवेग-धम्मेण उ जोव्वणं पि।
वुड्ढत्तमुच्चं तव खंति-धम्मा,
सव्वं पवित्तं सुहदंसणस्स॥

आपका शैशव टिका था नम्रता की नींव पर,
और जवानी पर रखी सुविवेक की पैनी नजर।
निज बुढ़ापे को क्षमा शांति से था मंडित किया,
गुरु सुदर्शन ने बड़ा ही श्रेष्ठतम जीवन जिया॥

12. **विवज्जिया अत्थकहा जणेहिं,**
कुओ कहं कामपरं कहेज्जा ।
सज्जो सया धम्मकहा-पयारे,
तम्हा हि लोगो पवणो सुधम्मे॥

अर्थ के लोभी जनों से भी न की आर्थिक कथा,
कामभोगों की कथा का आप में नहीं लेश था।
धार्मिक कथा कहने में उनको मिलता हृदयानन्द था,
सर्वजन ने चखा तब ही धर्म का मकरन्द था॥

13. **सुत्तेसु दिट्ठी गहणा णुमण्णा,**
अत्थेसु वित्थारपरा य बुद्धी।
आया पवित्तो उभएण जाओ,
नन्नत्थ पासामि मुणिं सरिक्खं॥

आगमों के तीन पथ हैं सूत्र अर्थ और है उभय,
सूत्रों को कण्ठस्थ करने में लगाया था समय।
अर्थ को सीखा सिखाया और बढ़ाया था सदा,
तदुभय का पारगामी उनसा मिलता है कदा॥

14. **कया किवासी दुहिए जणम्मि,**
पारे दुहाणं बहवो सुतिण्णा।
न भेदभावो हियए कयावि,
कओ तुए सव्वजणो सरिच्छो॥

दुखित जन पर निजकृपा का मेघ बरसाते रहे,
उसके कारण लाखों प्राणी दुख का हल पाते रहे।
नहीं किसी पर कम या ज्यादा कृपा में की कृपणता,
सर्वजन ने मानी थी निष्पक्षता की निपुणता॥

15. **सम्माणदाया गुरुए जणम्मि,**
पेम्मस्स वासी णियसीस-वग्गे।
साहेज्ज-कत्ता सम-बन्धुयाए,
तुला न तुब्भं विसमा कयावि॥

अपने से जो थे बड़े उनको दिया सम्मान था,
अपने से छोटों में बांटा स्नेह का वरदान था।
समवयस्कों से लिया सहयोग और देते रहे,
शुद्ध भावों से वो नौका संघ की खेते रहे॥

16. **पुण्णेण पुण्णो कलसो तवासी,**
सक्कार सेवा भरिओ अ सिन्धू।
निन्नत्त-सुण्णा चरिआ सयासी,
चारित्त-मेरू-सिहरो दुरूढो॥

पुण्य से भरपूर जीवन का कलश उनका रहा,
संस्कार सेवा के मधुर सिन्धु ये यश उनका रहा।
चर्या उनकी निम्नतागामी नहीं हर्गिज हुई,
उच्चता मेरू की उनके शील ने हरदम छुई॥

17. **अंतो बहिं सारिस जीवणो तुं,**
मायं न काउं तुए सक्कमासी।
साहू सया उज्जुय भूअ बुद्धी,
धण्णो गुरु वंदिअ-पूय-पाओ

आन्तरिक और बाह्य जीवन एक सा उनका रहा,
माया छल करने का उनके पास बुद्धिबल न था।
सच्चा साधु है वही जो ऋजुक बुद्धि युक्त हो,
आप सच्चे संत हो क्योंकि कपट से मुक्त हो॥

18. **उदारचेआ विसएसु आसी,**
अहीअवं सो निहिले सुगंथे।
सारं तओ गेण्हिअ दिण्णवं तं,
हंसो पयो गेण्हइ नीरमज्झा॥

ज्ञान का हर विषय सीखा क्षुद्रता से दूर रह,
अच्छे ग्रंथों को पढ़ा जिज्ञासा से भरपूर रह।
सार लेकर पुस्तकों से बांटते जग को रहे,
नीर क्षीर विवेक में सब हंस सा उनको कहें॥

19. **आलोयणा तेण कया सईया,**
अन्नो न आलोयण-पत्त-मासी।
सोच्चाण दोसे नियगे न कुद्धो,
तम्हा महावीर-समं चरित्तं॥

आत्मदोषों की खुशी से की सदा आलोचना,
औरों की आलोचना का मन नहीं हर्गिज बना।
दूसरों ने उनकी निंदा की तो धीरज से सुनी,
इसलिए महावीर की उपमा सही हमने चुनी॥

20. **बालत्तणे साहु-गुरूण पासे,**
सो सिक्खिओ धम्म-मयाण तत्तं।
पिआमहो पव्वइओ जया उ,
पयाणुसारी तइया नु जाओ॥

बालपन में संत मुनियों का मिला सान्निध्य था,
सीखा उनसे तुमने सारा धर्म तत्त्व वैविध्य था।
जब पितामह जग्गूमल जी बन गए दीक्षित मुनि,
उनके पीछे चल दिए और उनकी ही राहें चुनी॥

21. **जीवेसु सव्वेसु वि मित्तयासी,**
पमोय-भावो गुणिसुं सयासी।
कारुण्ण-भावो दुहिएसु तस्स,
मज्झत्थ-भावो विवरीय-लोगे॥

सर्व जीवों के प्रति मैत्री रखी हर पल मधुर,
गुणिजनों के प्रति तुम्हारी भावना मुदिता प्रचुर ।
क्लिष्ट और पीड़ित जनों से भाव करुणा का रखा,
और विरोधी व्यक्तियों को मध्य दृष्टि से लखा॥

22. **सम्मत्तमुक्किट्ठमुदाहु खाइं,**
नाणं तु पुव्वाण चउद्दसण्हं।
सेट्ठं अहक्खाय चरित्तमुत्तं,
साहूण सेट्ठो उ सुदंसणो नु॥

सम्यक्त्व सबसे श्रेष्ठ क्षायिक मानी है जिनधर्म में,
चौदह पूर्वी श्रेष्ठतम श्रुतज्ञानी हैं जिनधर्म में।
यथाख्यात चारित्र जैसे श्रेष्ठतम चारित्र है,
साधुओं में यों सुदर्शन गुरुदेव पवित्र हैं॥

23. सव्वट्ठसिद्धं हि विमाणमुच्चं,
धम्मे अहिंसा जह सव्व-सेट्ठा।
अणुत्तरग्गं जह मोक्ख-सोक्खं,
साहूण सेट्ठो उ सुदंसणो नु॥

देवलोकों में यथा सर्वार्थ सिद्ध विमान है,
धर्मों में सर्वोच्च करुणा और दया का स्थान है।
मोक्ष सुख सर्वोच्च सुख है जिसकी है उपमा नहीं,
साधुओं में गुरु सुदर्शन की कोई तुलना नहीं॥

24. वाणी जिणिंदाण अणागसत्थि,
सिद्धन्त-सेट्ठं सियवायमुच्चं।
पगास-सेट्ठो जह नेत्तजोई,
साहूण सेट्ठो उ सुदंसणो नु॥

जैसे जिनवाणी सभी भाषाओं में उत्तम कही,
और सिद्धान्तों में जैसे अनेकान्त महिमा रही।
रोशनी जैसे नयन की श्रेष्ठतम मानी गई,
श्रेष्ठता संतों में ऐसे आप की जानी गई॥

25. कम्हारदेसो भरहे पसत्थो,
गंधेसु वा केसरगंध माहु।
तंतेसु सेट्ठं जह लोगतंतं,
साहूण सेट्ठो उ सुदंसणो नु॥

कश्मीर का सौन्दर्य जैसे श्रेष्ठ भारत में कहा,
और केसर भी वहां का गंध में उत्तम रहा।
श्रेष्ठ वो शासन प्रणाली लोकतंत्र है जहां,
गुरु सुदर्शन की महत्ता जानता सारा जहां॥

26. विहारभूमी हरियाण आसी,
पंजाब जम्मू तह रायठाणं।
यू.पी. अ दिल्ली चरणेहि धण्णा,
सव्वो हि देसो रिणधारगोऽत्थि॥

आप विचरे तो हुआ हरियाणा भी हरियाला है,
पंजाब दिल्ली और जम्मू आपका मतवाला है।
यू.पी. को पावन किया राजस्थान छूआ जरा,
देश सारा आपके उपकारों से है ऋण भरा॥

27. **मंसासणं छड्डिअ मज्जपाणं,**
जूयं अ तेण्णं बहवो जुवाणा।
सम्मग्गगामी सयलो य संघो,
तवोवयारो गणिउं न सक्को॥

प्यार से तुमने छुड़ाए मांसभक्षण मद्यपान,
जूआ चोरी के कुपथ से बच गए लाखों जवान ।
संघ रक्षा में बहाया था पसीना देह का,
उपकार गिनना है असंभव जैसे पुष्कर मेह का॥

28. **परंपरेयं चलए अबाहा,**
सिरी-मयाराम गणो विभाइ।
पुज्जो अ णिच्चं मयणो मुणिंदो,
सव्वं तवायार-पयार हेउं॥

परम्परा संयम की अब भी चालू हमको दीखती,
मयाराम गण की प्रथा को आज जनता सीखती।
मदन गुरुवर के पुजारी बोलते जयकार हैं,
उसका कारण गुरु सुदर्शन का आचार प्रचार है॥

29. **सव्वत्थ पुज्जो तह माणणिज्जो,**
सुदंसणो नाम महामुणी सो।
करेउ दासे नियगे किवं नु,
मे जीवियं होज्ज जहा कयत्थं॥

सबकी श्रद्धा पूजा के जो पात्र हैं महनीय हैं,
गुरु सुदर्शन महामुनि के चरण युग नमनीय हैं।
दास पर करना कृपा है दास करता प्रार्थना,
हो सके जीवन सफल और हो सफल ये साधना॥

धम्मत्थुई

(धर्म-स्तुति)

1. **लोगस्स खेमं करिउं समत्थं,**
सिद्धन्तमुच्चं अदुवा मणुस्सं।
अक्खाहि मज्झं विणओ उ सीसो,
पण्हं निवेदेइ गुरुस्स पासं॥

विश्व का कल्याण करने में कुशल क्या है अहो,
कौन ऐसा व्यक्ति या सिद्धान्त है मुझ को कहो।
नम्र होकर शिष्य गुरुवर से है पृच्छा कर रहा,
अपनी और संसार की कल्याण इच्छा कर रहा॥

2. **धम्मो धरं धारइ धम्मिओ अ,**
मेरुव्व रक्खा करणे समत्थो।
धम्मं विणा जीवण धारणं पि,
सक्कं न सम्मं तुह पण्णवेमि॥

धर्म और धार्मिक पुरुष संसार का रक्षण करें,
जो सुमेरु बन हिफाजत धरती की हर क्षण करें।
जिंदगी भी धर्म बिन रे जीव टिक सकती नहीं,
सत्य कहता हूँ किसी में धर्म-सी शक्ति नहीं॥

3. **धम्मो सियावाय समुत्थिओ हि,**
समाहिदाया पसिणाण होइ।
एगंत चिंतापरगो उ धम्मो,
सयं समस्सा सयमेव दुक्खं॥

जिस धर्म की नींव में है स्याद्वादी धारणा,
विश्व के प्रश्नों का वो समाधान कारक है बना।
धर्म जब एकान्त के घेरों में होता बन्द है,
वो स्वयं बनता समस्या देता दुख और द्वन्द्व है॥

4. **दव्वेण भावेण दुहा अ धम्मो,**
अक्खीअए बाहिरओ उ दव्वो।
अब्भंतरो भावपरो य तम्हा,
ते दो मिलित्ता सयलो हि धम्मो॥

धर्म को हम हैं समझते मुख्यत: दो रूप में,
द्रव्य से और भाव से व्यवहार निश्चय रूप में।
धर्म की बाहरी क्रियाओं को कहा व्यवहार है,
आंतरिक भावों से मिलकर (जुड़कर) करता
बेड़ा पार है॥

5. **जे संपदाया पसिया जगम्मि,**
ते दव्वरूवेण कहेंति धम्मं।
पत्तं जहा होइ जलस्स ठाणं,
धम्मस्स ठाणं तह संपदाया॥

जग में जितने पंथ दिखते और संप्रदाय हैं,
वो धर्म की रक्षा में माने गए सदुपाय हैं।
जल से बुझती प्यास है जल की सुरक्षा पात्र से,
धर्म बचता पंथ से कहते गुरु यों छात्र से॥

6. **हिन्दू य इस्लाम खिरिस्त धम्मो,**
बोद्धो य सिक्खो जइणो जहूदी।
पारस्स धम्मो इयरे य धम्मा,
बज्झं हि रूवं पयडी कुणंति॥

विश्वव्यापी धर्मों में अब चार का ही नाम हैं,
बौद्ध है ईसाईयत है हिन्दू है इस्लाम है।
जैन सिख और हैं यहूदी पारसी आदि कई,
धर्म की हैं बाहरी शक्लें व शाखाएं कही॥

7. **परंपरा सक्कइ धम्मसद्दा,**
परोप्परं अत्थ समाणदाया।
एगेण पक्खेण तओ समाणा,
अण्णेण पक्खेण असमाणभावा॥

धर्म के मंचों पे चर्चा संस्कृति की होती है,
धर्म में लौकिक प्रथा की आकृति भी होती है।
परम्परा व संस्कृति और धर्म कुछ-2 एक हैं,
अन्य अर्थों में सभी में भिन्नताएं अनेक हैं॥

8. **एगम्मि देसे समए य एगे,**
भोज्जा विभूसा विविहा य भासा।
तेसिं सुरक्खा इइहास कज्जं,
जाणाहि एयं न उ धम्मतत्तं॥

किसी इलाके किसी समय जो खानपान प्रचलित हुआ,
भाषा बोली रहने सहने का भी ढंग विकसित हुआ।
संस्कृति के अंग ये इतिहास के अध्याय हैं,
पर नहीं हर्गिज कभी ये धर्म के पर्याय हैं॥

9. **परं जया धम्ममया हवंति,**
तया विरूवा अहिसाव रूवा।
तहा कहिज्जंति मयोसही ते,
विज्जा मणुस्साण दुगुंछणिज्जा॥

संस्कृति जब धर्म के चोगे को लेती है पहन,
धर्म को विकृत बना अभिशाप ही जाती है बन।
बुद्धिजीवी उस धर्म को कहकर अफीम पुकारते,
इस नशे में आदमी है धर्म का धन हारते॥

10. **चारित्तधम्मं सुयधम्ममुत्तं,**
संतावपीलं हि दुवे हरंति।
नाणेण बुद्धी विमला विदोसा,
चारित्तधम्मेण य आयसुद्धी॥

श्रुत तथा चारित्र दो पहलू धर्म के हैं कहे,
पीड़ा और संताप छूटे जो शरण इनकी गहे।
श्रुत से बुद्धि की हो शुद्धि, साफ हो अन्तः करण,
आत्मशुद्धि का उपाय, है बताया आचरण॥

11. मणो निरोहो वयणाण गुत्ती,
कायस्स चेट्ठा पणिहाण जत्तो[1]।
सव्वं समाहिप्पयमप्पणोऽत्थि,
तम्हा हि एए भणिया सुधम्मा॥

मन नियंत्रण भाषा संयम देह की हो साधना,
समझ लो इस जिंदगी के दुखों का है हल बना।
इसलिए शक्तित्रय को साधना ही धर्म है,
उलझनें सुलझाते जाना धर्म का ये मर्म है॥

12. मणस्स दोसा चउरो विभच्छा,
कोहो तहा माण छलाति तण्हा।
मंदी करित्ता निहणंति एए,
ते धम्म वच्छस्स फलं लहन्ते॥

मन की गठरी में भयानक चार बैठे दोष हैं,
तृष्णा नागिन मान अजगर माया व आक्रोश हैं।
इनकी भीषणता घटाकर करती है जो खात्मा,
धर्म के मीठे फलों को चखती है वो आत्मा॥

1. यत्न

13. **आहार सुद्धी पढमं विहेया,**
न मज्जमसं गहणिज्जमत्थि।
चोज्जं दुरायार दुरोदराणि,
अहम्म चिन्धा परिवज्जणीआ॥

व्यसन मुक्ति शर्त पहली, धर्म की ये नींव है,
मांस मदिरापान करके नरक जाता जीव है।
चोरी और व्यभिचार जूआ पाप की हैं निशानियां,
होती हैं बर्बाद इनसे कितनी ही जिंदगानियां॥

14. **चारित्तधम्मो दुविहं निवूढो,**
मुत्तिं ददाइ त्ति न संसओत्थि।
गिहत्थवासो तह रण्णवासो,
मग्गा इमे दुन्नि समुद्धरंति॥

आचरण मुक्ति दिलाता इसमें हैं संशय नहीं,
आचरण की धार दो धाराओं में बहती रही।
घर में रहकर भी करी जा सकती है आराधना,
दूसरी है जंगलों में जा के करनी साधना॥

15. भत्ती तहा नाण चरित्तधम्मा,
जीवा महट्ठाणठिया हवंति।
एगे गुणे दो वि गुणा पविट्ठा,
एवं तओ वि भणिया तिगप्पा॥

भक्तिपथ व ज्ञानपथ और कर्मपथ जिसने चुना,
आत्मा की उन्नति का सपना सच उसने बुना।
एक गुण अपनाने से दो गुण भी पीछे आते हैं,
बिगड़ी चेतन की स्थिति को तिकड़ी बन सुलझाते हैं॥

16. देसस्स भत्ती पहुभत्ती सेट्ठा,
अम्मा पिऊणं तह सुद्धभत्ती।
कज्जा सया सत्थ चिआय[1] कारी,
भत्तिं करेइत्ति निहालणीयं॥

देशभक्ति श्रेष्ठ है भक्ति प्रभु की श्रेष्ठ है,
श्रेष्ठ भक्ति जनक जननी की तथा जो ज्येष्ठ हैं।
स्वार्थ का जो त्यागी है भक्ति वही कर सकता है,
भक्त या सेवक सभी की पीड़ा को हर सकता है॥

1. स्वार्थ त्याग

17. **माला जवो संजम झाणमोणं,**
दीहा तवा संतिकरा तया उ।
जया कसाया पतणू हवंति,
सल्ला हवन्तीयरहा उ माया॥

माला जप संयम तपस्या मौन आदि तब सफल,
जब कषाय आत्मा से हल्की हो जाए निकल।
अन्यथा ये माया रूपी शल्य बन चुभ जाते हैं,
कषायमुक्ति ही है मुक्ति संत ये बतलाते हैं॥

18. **धम्मो सहावस्स वि वायगोऽत्थि,**
गुणस्स अट्ठं कहए य धम्मो।
जहा जलं सीय सहावमंतं,
अग्गी य उण्हो पगईइ होइ॥

निज भाव में रहना धर्म का अर्थ माना जाता है,
उष्णता से अग्नि का ज्यों ठंडक से जल का नाता है।
गुण को भी है धर्म कहते आत्मगुण विकसित करो,
इस तरह गुण वृद्धि से निज भाव को संस्कृत करो॥

19. **आया सईयप्पगइं पवण्णो,**
गुणे निए पावइ जा पहाओ[1]।
सो चेव मग्गो कहिओ सुधम्मो,
जहा सहावस्स गई[2] णु जाया॥

आत्मा जिस पथ पे चल निजरूपता हासिल करे,
और अपने में समाए सब गुणों को भी वरे।
उस ही पथ को धर्म और सद्धर्म कहना चाहिए,
उसकी ही अनुपालना में लीन रहना चाहिए॥

20. **चत्तारि धम्मस्स पवेसदारा,**
दाणं अ सीलं तव सुद्धभावा।
एतेहि जीवो सयलो य लोगो,
सव्वाण दुक्खाण करेइ अंतं॥

धर्म की नगरी के माने चार उत्तम द्वार हैं,
दान शील तप भावना ये धर्म के अवतार हैं।
चार के बल पर ये आत्मा नाश दुखों का करे,
चार का शरणा लिया जिसने वो क्यों दुख से डरे॥

1. जिस पथ से 2. प्राप्ति

21. आया सरीरं मण सेमुसी अ,
चत्तारि पक्खा खलु जीवणस्स।
तेसिं अ तित्ती कमसो नु धम्मा,
आहार सम्माणण नाणलद्धी॥

जिंदगी ये चार पहियों पर खड़ी इक कार है,
आत्मा है, देह है, मन बुद्धि का व्यापार है।
चारों की तृप्ति के साधन सम नहीं असमान हैं,
धर्म है, आहार है, सम्मान और विज्ञान है॥

22. धम्मेण हीणा खलु रायनीई,
चण्डालिणी होइ विधंससंसी।
जया य सा धम्म गुणोववेया,
तया जगज्जीव वियासकारी॥

राजनीति धर्म से विरहित अगर हो जाती है,
राक्षसी चण्डालिनी बनकर वो ध्वंस मचाती है।
धर्म का संस्पर्श मिल जाए तो वो वरदान है,
जगत् के जीवों का होता जाता फिर कल्याण है॥

23. धम्मस्स संगेण णरो महप्पा,
गावा पवित्तो तह वंदणिज्जो।
पत्ताणि गंथस्स लहंति सन्नं,
धम्मो हि सव्वं परिवट्टए त्ति॥

धर्म के जुड़ने से जीवन की शक्ल जाती बदल,
मनुज बनते महात्मा पाषाण बनते पूजा स्थल।
कागजों को ग्रंथ का गौरव दिया है धर्म ने,
मूल्यहीनों को बहुत मूल्य दिया है धर्म ने॥

24. कामो य मोक्खो पुरिसत्थ दोण्णि,
दोण्हं य सिद्धी धण धम्म हेऊ।
कामा सुहं लब्भइ णस्सरं नु ,
धम्मा सुहं सासयमप्पनिट्ठं [1] ॥

काम एवं मोक्ष ये दो पुरुष के पुरुषार्थ हैं,
अर्थ से हो काम प्राप्ति, धर्म से मोक्षार्थ है।
काम है जिस्मानी सुख नश्वर, क्षणिक और दुख भरा,
मोक्ष शाश्वत शुद्ध सुख स्वाधीन है निर्मल खरा॥

1. आत्मनिष्ठम्

25. ईसावयारो सुय देसगा वा,
सव्वण्णु बुद्धा पवयंति धम्मं।
सव्वे वि आयारवियार सुद्धिं,
करित्तु भूमिं हि कुणंति सग्गं॥

सृष्टि में धर्मोपदेशक कर रहे उपकार हैं,
कोई ईश्वर का तनय पैगम्बर कोई अवतार है।
बुद्ध या सर्वज्ञ बनकर मार्गदर्शन कर रहे,
विचार और आचार शुद्ध कर स्वर्ग पैदा कर रहे॥

26. पव्वित्ति धम्मो य निवित्ति धम्मो,
आवासओ होइ जणस्स णिच्चं।
पुण्णं पि धम्मो तह संवरो वि,
दुवे वि चक्खू पह दंसणट्ठं ॥

है प्रवृत्ति और निवृत्ति धर्म की दो बाजुएं,
दोनों के सहयोग से ही जीव शिखरों को छुए।
पुण्य और संवर ये दोनों धर्म के दो पक्ष हैं,
मार्गदर्शन करते जैसे मिलके दोनों अक्ष हैं॥

27. **दव्वेण खेत्ता समएण धम्मो,**
न वत्थुओ मंगल कारगोऽत्थि।
सुद्धेण भावेण कओ उ धम्मो,
निस्संसयं मंगल संति दाया॥

द्रव्य शुद्धि, क्षेत्र शुद्धि, काल शुद्धि कर रहे,
भाव शुद्धि के बिना पातक नहीं है झर रहे।
भाव शुद्धि सहित जो करता धर्म की साधना,
उसके चारों ओर शान्ति रस बरसता है घना॥

28. **सेवा मणुस्साण पसूण रक्खा,**
कीडाण पक्खीण सुपालणं वि।
वणप्फईए जल रक्खणं च,
सव्वं इणं धम्मफलं समक्खं॥

मानवों की सेवा में इंसानियत आगे बढ़ी,
पक्षियों पशुओं व कीडों की सुरक्षा में खड़ी।
पेड़, पौधे और पानी के प्रति संवेदना,
सबके पीछे है छिपी बस धर्म की ही प्रेरणा॥

29. **सव्वण्णु देवो गुरुणो महप्पा,**
धम्मस्स आराहण कारणा नु।
जम्हाहि धम्मो सयलाण केन्दं,
सया निसेव्वो तह पालणीओ॥

नर से नारायण बनाती धर्म की आराधना,
आत्मा बनती महात्मा कर धर्म की पालना।
धर्म सबकी जिन्दगी का केन्द्र पालन हार है,
धर्म की सत्पालना से सब सुखी संसार है॥

पागय भासा-थुई

1. जिणिंदाणं महानाणं मायं जाए गिराए सा।
अगयं जह केच्छुल्ले[1] भारही अद्ध मागही॥

2. नियण्ठ नाय पुत्तस्स पंच वास सया पुरा।
पच्छा वि य समं कालं भासा पच्चलिया इमा॥

3. सिसुणो महिला वग्गो य गोवाला किसगा तहा।
अणहिआ जणा सम्मं भासंति निब्भयं खलु॥

4. सहजा पागइया वाणी पिया तित्थयराण हि।
सुबोहा सव्व जोणीणं जे वि तत्थ समागया॥

5. सक्कय नाडग गारेहिं सीकया इमा भारही।
अंतरेण इयं भासं तेसिं चारुत्तणं हयं॥

6. बोद्ध धम्मस्स गंथा वि अद्ध मागह निम्मिआ।
दुवे धम्मा पसिद्धा हि जण भासाइ कारणा॥

7. इमीए अंगया[2] नाया णेगा भासा समिद्ध या।
सोरसेणी अपब्भंसा हिंदी य अहुणा तणी॥

1. अगदं यथा कैप्सुले 2. अंगजा = पुत्री

8. सक्कइ इइ हासस्स कोसो गूढो इमाए उ।
विज्जाणं विविहाणं च इयं खाणी महायता॥

9. सिला लेहा असोगस्स लिहिआ संति णेगसो।
सव्वे पागय भासाए दीहरेयं [1] परंपरा॥

10. नाण इड्ढीइ संपण्णा, दंसण इड्ढी दाइगा।
चारित्त इड्ढी भूइट्ठा, तव इड्ढी सहाइगा॥

11. जणणी सक्कय भासाए दुहिआ[2] वि कहिज्जइ।
सही वा भइणी वावि सच्चमेयं वओ तिगं [3]॥

12. लोगुत्तरा बहु गंथा लोइया वि गंथा बहू।
गंथिया पागए संति कव्व रयण पूरिया॥

13. एत्थ संति महा कव्वा नाडया नीइ सुत्तीओ।
महुर कहाणगं भूरि इइहास पुराणयं॥

14. दव्वाणुओग संपुण्णा कहाणुओग मंडिया।
भासेयं गणियं धारी चारित्त जोग सालिणी॥

1. दीर्घा इयं 2. दुहिता 3. वचस्त्रिकं

15. अणाइ णिहणा तत्ता निबद्धा संति णेगसो।
सेली उज्जू इमीए उ सव्व लोगम्मि विस्सुआ॥

16. भाव पवित्तयाए हि इयं भासा सुपावणी।
अण्णहा सद्द संघायं पूयारिहं न अप्पणा॥

17. सिद्धसेणो महा विज्जं आयरिओ निवाणओ[1]।
सोवि दण्डारिहो जाओ उवेक्खाए इमाए उ॥

18. एगिंदिया न भासंति कुणंति विगला झुणिं।
पसुणो बुक्क बुक्कंति माणवा फुड भासगा॥

19. साहुणो चउरो भासा भासंति छउमत्थओ।
केवलिणो दुवे बिंति सच्चं च ववहारिगं॥

20. आगमेसु इमे दोण्णि लब्भंति लिहिआ वया।
न तत्थ कोवि दोसोऽत्थि वीयराग परूवणा॥

21. वीयरागस्स संदेसा निहिया पागए नणू।
देवा वयंति एयाए भासाए इह आगया॥

1. नृपानतः

22. समग्गे भारहे वासे इमा वुच्चइ भारही।
पंचंबु वासिणो अज्ज वि पउंजंति पागयं॥

23. संपेसणं वियाराणं न संभवं वओ विणा।
वयाइं दुविहाइं हि, लिहियाणि बुइयाणि च॥

24. कण्ठाओ निग्गया सद्दा सज्जो नस्संति सुण्णए।
लिहिया वास सहस्से वि चिट्ठंति अमरा इव॥

25. महावीरस्स बुद्धस्स सद्दा लब्भंति अज्जवि।
उवगारो महं तेसिं ता सद्द बम्ह धारणा॥

26. महावीरेण बुद्धेण जइ संपक्क भावणा।
सिक्खणिज्जा तयाम्हेहिं भारही अद्धमागही॥

27. इमाए पालिया अम्हे एयाए म्हो उ दारया।
एयाए थणंधया सव्वे लज्जं रक्खामु निच्चसो॥

28. न विणा जीवणं अम्हं सुरक्खियं इमाए उ।
सय सक्कइ रक्खाए पागय रक्खणं धुवं॥

29. अम्हाण जेण साहूणं दाइत्तं उ महत्तमं।
पयारो करणिज्जो नु सव्वत्थ सव्वहाऽहुणा॥

सुदंसण गुरु थवो

नमिऊण चरण जुअलं, विंदामि सुहमउलं।
सरिऊण वयण कमलं विदामि सुहमउलं (धुवं) ॥

1. तुए णायं संसारे सारो न दिस्सइ
आसत्तीए मच्छिआ उ खेलम्मि लिस्सइ
उज्झिऊण मलं सयलं विंदामि सुहमउलं ॥

2. कोव अग्गि जालाओ विज्झा विआ तुमए
सुहज्झाण वारिणा मह संती वड्ढए
वमिऊण कोह गरलं विंदामि सुहमउलं ॥

3. अणुत्तरं तुज्झमासी विणय मद्दवं
पुरा एवमकासी गोयमो भयवं
खण्डिऊण गव्वमयलं विंदामि सुहमउलं ॥

4. एगोवि भावो तुज्झ पच्छण्णो न विज्जइ
आलोयणा कया तहवि जीए जीवो सिज्झइ
करिऊण मणं सरलं विंदामि सुहमउलं ॥

5. तण्हाए पासा जह तुमए णु छिन्दिआ
संतोस लच्छी तेण सासया नु लद्धिआ
चइऊण य कम्मफलं विंदामि सुहमउलं ॥

6. धम्ममग्ग नासिणी वासणा विणासिआ
अप्पाणम्मि णिहिआ सिरी उ पगासिआ
गहिऊण आसीस बलं विंदामि सुहमउलं ॥

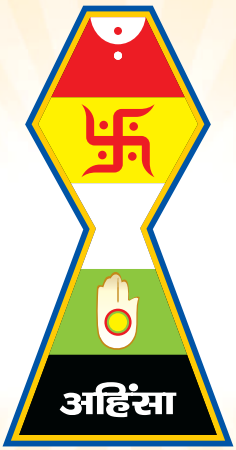

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

To download this book, please visit
www.jainsanskarshivir.com/downloads
www.jaingurusudarshan.com/books